

श्रीसोमशर्माद्विजवंशसन्मणिः श्रीभद्रबाहुर्मुनिसत्तमाग्रणीः ।
जिनेन्द्रधर्माब्धिसमग्रचंद्रमाः कुर्यात्सतां सारसुखाश्रिताः शुभाः ॥२८॥
इति कथाकोशे पञ्चमश्रुतकेवलिश्रीभद्रबाहुमुनेराख्यानं समाप्तम् ।

६२. द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिपुत्राणां कथा

श्रीसर्वज्ञं प्रणम्योच्चैर्लोकालोकप्रकाशकम् । द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिपुत्राणां चरित्रं रचयाम्यहम् ॥१॥
कौशाम्बीनगरे रम्ये द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिनोभवन् । इन्द्रदत्तादयः ख्याता भूरिद्रव्यसमन्विताः ॥२॥
तेषां समुद्रदत्ताद्याः पुत्रा द्वात्रिंशदुत्तमाः । ये जाताः सद्गुणोपेताः सारसम्यक्त्वमण्डिताः ॥३॥
सर्वे ते जिनपादाब्ज-सेवनैकमधुव्रताः । परस्परं सुमित्रत्वं प्राप्ताः सद्धर्मशालिनः ॥४॥
अहो पुण्यस्य सामग्री सर्वे ते श्रेष्ठिनां सुताः । लक्ष्मीमित्रत्वसद्धर्म-सादृश्यं यत्समागताः ॥५॥
एकदा त्रिजगत्पूज्यं केवलज्ञानलोचनम् । श्रीजिनेन्द्रं गुणैः सान्द्रं समभ्यर्च्य प्रभक्तितः ॥६॥
नत्वा स्तुत्वा सुरैः स्तुत्यं धर्ममाकर्ण्य निर्मलम् । सर्वे समुद्रदत्ताद्या महाभव्यमतल्लिका ॥७॥

आदि की परीषह जीतकर अन्त में स्वर्गलाभ किया । वे जैनधर्म के सार तत्त्व को जानने वाले महान् तपस्वी श्रीभद्रबाहु आचार्य हमें सुखमयी सन्मार्ग में लगावें ॥२४-२७॥

सोमशर्मा ब्राह्मण के वंश के एक चमकते हुए रत्न, जिनधर्मरूप समुद्र के बढ़ाने को पूर्ण चन्द्रमा और मुनियों के, योगियों के शिरोमणि श्रीभद्रबाहु पंचम श्रुतकेवली हमें वह लक्ष्मी दें जो सर्वोच्च सुख की देने वाली है, सब धन-दौलत, वैभव-सम्पत्ति में श्रेष्ठ है ॥२८॥

६२. बत्तीस सेठ पुत्रों की कथा

लोक और अलोक के प्रकाश करने वाले-उन्हें देख जानकर उनके स्वरूप को समझाने वाले श्रीसर्वज्ञ भगवान् को नमस्कार कर बत्तीस सेठ पुत्रों की कथा लिखी जाती है ॥१॥

कौशाम्बी में बत्तीस सेठ थे । उनके नाम थे इन्द्रदत्त, जिनदत्त, सागरदत्त आदि । इनके पुत्र भी बत्तीस ही थे । उनके नाम समुद्रदत्त, वसुमित्र, नागदत्त, जिनदास आदि थे । ये सब ही धर्मात्मा थे, जिनभगवान् के सच्चे भक्त थे, विद्वान् थे, गुणवान् थे और सम्यक्त्वरूपी रत्न से भूषित थे । इन सबकी परस्पर में बड़ी मित्रता थी । वह एक उनके पुण्य का उदय कहना चाहिए जो सब ही धनवान्, सब ही गुणवान्, सब ही धर्मात्मा और सबकी परस्पर में गाड़ी मित्रता । बिना पुण्य के ऐसा योग कभी मिल ही नहीं सकता ॥२-५॥

एक दिन ये सब ही मित्र मिलकर एक केवलज्ञानी योगिराज की पूजा करने को गए । भक्ति से इन्होंने भगवान् की पूजा की और फिर उनसे धर्म का पवित्र उपदेश सुना । भगवान् से पूछने पर इन्हें जान पड़ा कि इनकी उमर अब बहुत थोड़ी रह गई है । तब अन्त समय में आत्म हित साधने के योग को उचित समझ उन सभी ने संसार का भटकना मिटाने वाली जिनदीक्षा ले ली । दीक्षा लेकर तपस्या करते हुए ये यमुना नदी के किनारे पर आए । यहीं इन्होंने प्रायोपगमन संन्यास ले लिया ।

ज्ञात्वा स्वल्पतरं स्वायुः स्वयम्भुवदनाम्बुजात्। ततो दीक्षां समादाय भवभ्रमणनाशिनीम् ॥८॥
 ते सर्वे मुनयो धीरा जैनतत्त्वविदांवराः। सत्तपश्चरणोपेता विस्तीर्णे यमुनातटे ॥९॥
 प्रायोपयानसंज्ञेन मरणेन स्थिरं स्थिताः। महावृष्ट्यां प्रजातायां प्रवाहेन नदीहृदे ॥१०॥
 पातितास्ते तदा सर्वे कालं कृत्वा समाधिना। स्वर्गं प्राप्ताः सतां वृत्तं मेरोः शृङ्गाच्च निश्चलम् ॥११॥
 स्वर्गे तत्र लसत्सौख्यं भुंजानस्ते स्वपुण्यतः। श्रीमज्जिनेन्द्रपादाब्जसंजाता भक्तिनिर्भराः ॥१२॥

स जयतु जिनदेवो यस्य चारित्रमुच्चैः स्थिरतरमतुलं वै दुष्टनानोपसर्गैः।

सकलभुवनसारं दत्तसंसारपारं परमसुखनिवासं ध्वस्तमोहादिपाशाम् ॥१३॥

इति कथाकोशे द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिपुत्राणामाख्यानं समाप्तम्।

भाग्य से इन्हीं दिनों में खूब जोर की वर्षा हुई। नदी, नाले सब पूर आ गए। यमुना भी खूब चढ़ी। एक जोर का ऐसा प्रवाह आया कि ये सभी मुनि उसमें बह गए। अन्त में समाधिपूर्वक शरीर छोड़कर स्वर्ग गए। सच है—महापुरुषों का चरित्र सुमेरु से कहीं स्थिरशाली होता है। स्वर्ग में दिव्य सुखों को भोगते हुए वे सब जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति में सदा लीन रहते हैं ॥६-१२॥

कर्मों को जीतने वाले जिनेन्द्र भगवान् सदा जय लाभ करें। उनका पवित्र शासन संसार में सदा रहकर जीवों का हित साधन करे। उनका सर्वोच्च चारित्र अनेक प्रकार के दुःसह कष्टों को सहकर भी मेरु सदृश स्थिर रहता है, उसकी तुलना किसी के साथ नहीं की जा सकती, वह संसार में सर्वोत्तम आदर्श है, भव-भ्रमण मिटाने वाला है, परम सुख का स्थान है और मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि आत्म शत्रुओं का नाश करने वाला है, उन्हें जड़ मूल से उखाड़ फेंक देने वाला है। हे भव्यजन! आप भी इस उच्च आदर्श को प्राप्त करने का प्रयत्न करिये, ताकि आप भी परमसुख-मोक्ष के पात्र बन सकें। जिनेन्द्र भगवान् इसके लिए आप सबको शक्ति प्रदान करें, यही भावना है ॥१३॥

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञान भास्कराः।

कुर्वन्तु जगतः शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः॥

॥ इति आराधना कथाकोश द्वितीय भाग ॥

तृतीयखण्डम्

६३. श्रीधर्मघोषाख्यानम्

प्रणम्य त्रिजगद्देवं श्रीजिनं धर्मदेशकम्। वक्ष्ये श्रीधर्मघोषाख्यमुनीन्द्रस्य कथानकम् ॥१॥
चम्पायां चैकदा कृत्वा सुधीर्मासोपवासकम्। धर्मघोषो मुनिः पश्चाद्धर्ममूर्तिर्गुणाकरः ॥२॥
गोष्ठे तु पारणां कृत्वा संचचाल स्वलीलया। नष्टे मार्गे तदा भूरिहरिताड्ढुरितोपरि ॥३॥
आगच्छन्स तृषाक्रान्तो गंगातीरे मनोहरे। वटवृक्षतले यावद्धि-श्रान्तोसौ मुनीश्वरः ॥४॥
गंगादेवी तदा वीक्ष्य तं मुनिं तपसां निधिम्। प्रासुकं निर्मलं तोयं कुंभे कृत्वा मनोहरम् ॥५॥
समानीय प्रणम्योच्चैः संजगादेति भो मुने। कृपां कृत्वा पिबेदं मे सज्जलं भुवनोत्तमम् ॥६॥
तेनोक्तं श्रीमुनीन्द्रेण नास्माकं कल्पते शुभे। ततोऽसौ देवता गत्वा शीघ्रं पूर्वविदेहकम् ॥७॥
केवलज्ञानिनं नत्वा भक्तितः संजगौ तदा। न पीतं हेतुना केन जलं मे मुनिना विभो ॥८॥
ततः श्रीकेवली प्राह जिनेन्द्रो भुवनार्चितः। मुग्धे देवकराहारो मुनीनां नैव कल्पते ॥९॥
गंगादेवी तदागत्य सुगन्धीकृतदिङ्मुखाम्। समन्तात्तन्मुनेः शीततोयवृष्टिं चकार सा ॥१०॥

६३. धर्मघोष मुनि की कथा

सत्य धर्म का उपदेश करने वाले अतएव सारे संसार के स्वामी जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर श्रीधर्मघोष मुनि की कथा लिखी जाती है ॥१॥

एक महीना के उपवास से धर्ममूर्ति श्रीधर्मघोष मुनि एक दिन चम्पापुरी के किसी मुहल्ले में पारणा कर तपोवन की ओर लौट रहे थे। रास्ता भूल जाने से उन्हें बड़ी दूर तक हरी-हरी घास पर चलना पड़ा। चलने में अधिक परिश्रम होने से थकावट के मारे उन्हें प्यास लग आई, वे आकर गंगा के किनारे एक छायादार वृक्ष के नीचे बैठे गए। उन्हें प्यास से कुछ व्याकुल से देखकर गंगा देवी पवित्र जल का भरा एक लोटा लेकर उनके पास आई वह उनसे बोली-योगिराज, मैं आपके लिए ठंडा पानी लाई हूँ, आप इसे पीकर प्यास शान्त कीजिए। मुनि ने कहा-देवी, तूने अपना कर्तव्य पूरा किया, यह तेरे लिए उचित ही था; पर हमारे लिए देवों द्वारा दिया गया आहार-पानी काम नहीं आता। देवी सुनकर बड़ी चकित हुई वह उसी समय इसका कारण जानने के लिए विदेह क्षेत्र में गई और वहाँ सर्वज्ञ भगवान् को नमस्कार कर उसने पूछा-भगवान्, एक प्यासे मुनि को मैं जल पिलाने गई, पर उन्होंने मेरे हाथ का पानी नहीं पिया; इसका क्या कारण है? तब भगवान् ने इसके उत्तर में कहा-देवों का दिया आहार मुनि लोग नहीं कर सकते। भगवान् का उत्तर सुन देवी निरुपाय हुई तब उसने मुनि को शान्ति प्राप्त हो, इसके लिए उनके चारों ओर सुगन्धित और ठण्डे जल की वर्षा शुरू की। उससे मुनि को शान्ति